अनुवाद

इनके अतिरिक्त, धृष्टकेतु, चेकितान, काशीराज, पुरुजित्, कुन्तिभोज, शैब्य, आदि महान् नरश्रेष्ठ एवं पराक्रमी योद्धा भी इस सेना में हैं।।५।।

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।।६।।

युधामन्युः =युधामन्यु; **च** =तथा; **विक्रान्तः** =पराक्रमी; **उत्तमौजाः** =उत्तमौजा; **च** =तथा; **वीर्यवान्** =महान् बलशाली; **सौभद्रः** =सुभद्रापुत्र; **द्रौपदेयाः** =द्रौपदी के पाँचों पुत्र; **च** =तथा; **सर्वे एव** =सभी; **महारथाः** =महारथी हैं।

अनुवाद

पराक्रमी युधामन्यु, वीर्यवान् उत्तमौजा, सुभद्रापुत्र (अभिमन्यु) तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्र—ये सभी महारथी हैं।।६।।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।।७।।

अस्माकम् =हमारे दल में; **तु** = भी; **विशिष्टाः** =विशेष शक्तिशाली; **ये** =जो; **तान्** =उन्हें; **निबोध** =जान लीजिए; **द्विजोत्तम** =हे ब्राह्मण-श्रेष्ठ; **नायकाः** =सेनापति; **मम** =मेरी; **सैन्यस्य** =सेना के; **संज्ञार्थम्** =जानने के लिए; **तान्** =उन्हें; **ब्रवीमि** =कहता हूँ; **ते** =आपके।

अनुवाद

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! आपके जानने के लिए अपने सैन्य-बल के योग्य सेनापतियों का भी मैं वर्णन करता हूँ।।७।।

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।।८।।

भवान् =आप; **भीष्मः** =पितामह भीष्म; **च** =तथा; **कर्णः** =कर्ण; **च** =तथा; **कृपः** =कृपाचार्य; **च** =और; **समितिंजयः** =सदा संग्राम विजयी; **अश्वत्थामा** =अश्वत्थामा; **विकर्णः** =विकर्ण; **च** =तथा; **सौमदत्तिः** =सोमदत्तपुत्र; **तथा** =वैसे; **एव** =ही; **च** =तथा।

अनुवाद

हमारी सेना में स्वयं आप, पितामह भीष्म, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण तथा सोमदत्तपुत्र भूरिश्रवा आदि हैं; ये सभी संग्राम में सदा विजयी रहे हैं।।८।।

तात्पर्य

यहाँ दुर्योधन ने अपने दल के नित्य संग्राम-विजयी विलक्षण वीरों का उल्लेख किया है। विकर्ण दुर्योधन का अनुज था तथा अश्वत्थामा द्रोणाचार्य का पुत्र था। सौमदत्ति अर्थात् भूरिश्रवा बाह्लीक देश के राजा का आत्मज था। कर्ण अर्जुन का